

दुआ-45

दुआए विदाए माहे रमजान

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

ऐ अल्लाह! ऐ वह जो (अपने एहसानात) का बदला नहीं चाहता। ऐ वह जो अता व बख्शिश पर पशेमान नहीं होता। ऐ वह जो अपने बन्दों को (उनके अमल के मुकाबले में) नपा तुला अज्र नहीं देता। तेरी नेमतें बगैर किसी साबेका इस्तेहकाक के हैं और तेरा अफो व दरगुजर तफ़ज़्जुल व एहसान है। तेरा सज़ा देना ऐने अद्ल और तेरा फ़ैसला ख़ैर व बहबूदी का हामिल है। तू अगर देता है तो अपनी अता को मन्नत गुजारी से आलूदा नहीं करता और अगर मना कर देता है तो यह जुल्म व ज़्यादती की बिना पर नहीं होता। जो तेरा षुक्र अदा करता है तू उसके षुक्र की जज़ा देता है। हालांके तू ही ने उसके दिल में शुक्रगुजारी का अलका किया है और जो तेरी हम्द करता है उसे बदला देता है। हालांके तू ही ने उसे हम्द की तालीम दी है और ऐसे शख्स की पर्दापोशी करता है के अगर चाहता तो उसे रूसवा कर देता, और ऐसे शख्स को देता है के अगर चाहता तो उसे न देता। हालांके वह दोनों तेरी बारगाहे अदालत में रूसवा व महरूम किये जाने ही के काबिल थे मगर तूने अपने अफ़आल की बुनियाद व तफ़ज़्जुल व एहसान पर रखी है और अपने इक्तेदार को अफ़ो व दरगुजर की राह पर लगाया है। और जिस किसी ने तेरी नाफ़रमानी की तूने उससे बुर्दबारी का रवैया इख्तेयार किया। और जिस किसी ने अपने नफ़्स पर जुल्म का इरादा किया तूने उसे मोहलत दी, तू उनके रूजूअ होने तक अपने हिल्म की बिना पर मोहलत देता है और तौबा करने तक उन्हें सज़ा देने में जल्दी नहीं करता ताके तेरी मन्शा के ख़िलाफ़ तबाह होने वाला तबाह न हो और तेरी नेमत की वजह से बदबख्त होने वाला बदबख्त न हो मगर उस वक़्त के जब उस पर पूरी उज़्रदारी और एतमामे हुज्जत हो जाए। ऐ करीम! यह (एतमामे हुज्जत) तेरे अफ़ो व दरगुजर का करम और ऐ बुर्दबार तेरी शफ़क्कत व मेहरबानी का फ़ैज़ है तू ही है वह जिसने अपने बन्दों के लिये अफ़ो व बख्शिश का दरवाज़ा खोला है और उसका नाम तौबा रखा है और तूने इस दरवाज़े की निशानदेही के लिये अपनी वही को रहबर करार दिया है ताके वह उस दरवाज़े से भटक न जाएं। चुनांचे ऐ मुबारक नाम वाले तूने फ़रमाया है के खुदा की बारगाह में सच्चे दिल से तौबा करो। उम्मीद है के तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारे गुनाहों को महो कर दे और तुम्हें उस बेहिश्त में दाखिल करे जिसके (मोहल्लात व बागात के) नीचे नहरें बहती हैं। उस दिन जब खुदा अपने रसूल स0 और उन लोगों को जो उस पर इमान लाए हैं रूसवा नहीं करेगा बल्कि उनका नूर उनके आगे आगे और उनकी दाईं जानिब चलता होगा और वह लोग यह कहते होंगे के ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे लिये हमारे नूर को कामिल फ़रमा और हमें बख़्श दें इसलिये के तू हर चीज़ पर कादिर है। तो अब जो इस घर में दाखिल होने से ग़फ़लत करे जबके दरवाज़ा खोला और रहबर मुक़रर किया जा चुका है तो इसका उज़्र व

बहाना क्या हो सकता है? तू वह है जिसने अपने बन्दों के लिये लेन देन में ऊंचे नरखों का ज़िम्मा ले लिया है और यह चाहा है के वह जो सौदा तुझसे करें उसमें उन्हें नफ़ा हो और तेरी तरफ़ बढ़ने और ज़्यादा हासिल करने में कामयाब हों। चुनांचे तूने के जो मुबारक नाम वाला और बलन्द मक़ाम वाला है। फ़रमाया है- "जो मेरे पास नेकी लेकर आएगा उसे उसका दस गुना अज़्र मिलेगा और जो बुराई का मुरतकिब होगा तो उसको बुराई का बदला बस उतना ही मिलेगा जितनी बुराई है।" और तेरा इरशाद है के "जो लोग अल्लाह तआला की राह में अपना माल खर्च करते हैं उनकी मिसाल उस बीज की सी है जिससे सात बालियां निकलें और हर बाली में सौ सौ दाने हों और खुदा जिसके लिये चाहता है दुगना कर देता है" और तेरा इरशाद है के - कौन है जो अल्लाह तआला को क़र्ज़ हसना दे ताके खुदा उसके माल को कई गुना ज़्यादा करके अदा करे" और ऐसी ही अफ़ज़ाइश इसनात के वादे पर मुश्तमिल दूसरी आयतें के जो तूने कुरान मजीद में नाज़िल की हैं और तू ही वह है जिसने वही व ग़ैब के कलाम और ऐसी तरगीब के जरिये के जो उनके फ़ायदे पर मुश्तमिल है ऐसे उमूर की तरफ़ उनकी रहनुमाई की के अगर उनसे पोशीदा रखता तो न उनकी आंखें देख सकतीं न उनके कान सुन सकते और न उनके तसव्युरात वहां तक पहुंच सकते। चुनांचे तेरा इरशाद है के तुम मुझे याद रखो मैं भी तुम्हारी तरफ़ से गाफ़िल नहीं होंगा और मेरा शुक्र अदा करते रहो और नाशुकी न करो। और तेरा इरशाद है के "अगर नाशुकी की तो याद रखो के मेरा अज़ाब सख्त अज़ाब है" और तेरा इरशाद है के "मुझसे दुआ मांगो तो मैं कुबूल करूंगा, वह लोग जो गुरूर की बिना पर मेरी इबादत से मुंह मोड़ लेते हैं वह अनक़रीब ज़लील होकर जहन्नूम में दाखिल होंगे।" चुनांचे तूने दुआ का नाम इबादत रखा और उसके तर्क को गुरूर से ताबीर किया और उसके तर्क पर जहन्नूम में ज़लील होकर दाखिल होने से डराया। इसलिये उन्होंने तेरी नेमतों की वजह से तुझे याद किया। तेरे फ़ज़ल व करम की बिना पर तेरा शुक्रिया अदा किया और तेरे हुक्म से तुझे पुकारा और (नेमतों में) तलबे अफ़ज़ाइश के लिये तेरी राह में सदका दिया और तेरी यह रहनुमाई ही उनके लिये तेरे ग़ज़ब से बचाव और तेरी खुशनुदी तक रसाई की सूरत थी। और जिन बातों की तूने अपनी जानिब से अपने बन्दों की राहनुमाई की है अगर कोई मखलूक अपनी तरफ़ से दूसरे मखलूक की ऐसी ही चीज़ों की तरफ़ राहनुमाई करता तो वह काबिले वहसील होता। तो फिर तेरे ही लिये हम्द व सताइश है। जब तक तेरी हम्द के लिये राह पैदा होती रहे और जब तक हम्द के वह अल्फ़ाज़ जिनसे तेरी तहमीद की जा सके और हम्द के वह मानी जो तेरी हम्द की तरफ़ पलट सकें बाक़ी रहें। ऐ वह जो अपने फ़ज़ल व एहसान से बन्दों की हम्द का सज़ावार हुआ है और उन्हें अपनी नेमत व बख़्शिश से ढांप लिया है। हम पर तेरी नेमतें कितनी आशकारा हैं और तेरा इनआम कितना फ़रावां है और किस कद्र हम तेरे इनआम व एहसान से मखसूस हैं। तूने उस दीन की जिसे मुन्तख़िब फ़रमाया और उस तरीके की जिसे पसन्द फ़रमाया और उस रास्ते की जिसे आसान कर दिया हमें हिदायत की और अपने हां करीब हासिल करने और इज़्जत व बुजुर्गी तक

पहुंचने के लिये बसीरत दी। बारे इलाहा! तूने इन मुन्तखब फ़राएज़ और मखसूस वाजेबात में से माहे रमज़ान को करार दिया है। जिसे तूने तमाम महीनों में इम्तियाज़ बख़्श और तमाम वक्तों और ज़बानों में उसे मुन्तखब फ़रमाया है। और इसमें क़ुरान और नूर को नाज़िल फ़रमाकर और ईमान को फ़रोग व तरक्की बख़्श कर उसे साल के तमाम औकात पर फ़ज़ीलत दी और इसमें रोज़े वाजिब किये और नमाज़ों की तरगीब दी और उसमें शबे क़द्र को बुजुर्गी बख़्शी जो खुद हज़ार महीनों से बेहतर है। फिर इस महीने की वजह से तूने हमें तमाम उम्मतों पर तरजीह दी, और दूसरी उम्मतों के बजाए हमें इसकी फ़ज़ीलत के बाएस मुन्तखब किया। चुनान्चे हमने तेरे हुक्म से इसके दिनों में रोज़े रखे और तेरी मदद से इसकी रातें इबादत में बसर कीं। इस हालत में के हम इस रोज़ा नमाज़ के ज़रिये तेरी उस रहमत के ख्वास्तगार थे जिसका दामन तूने हमारे लिये फैलाया है और उसे तेरे अज़्र व सवाब का वसीला करार दिया और तू हर उस चीज़ के अता करने पर कादिर है जिसकी तुझसे ख्वाहिश की जाए और हर उस चीज़ का बख़्शने वाला है जिसका तेरे फ़ज़ल से सवाल किया जाए तू हर उस शख्स से करीब है जो तुझसे कुर्ब हासिल करना चाहे। इस महीने ने हमारे दरम्यान काबिले सताइश दिन गुजारे और अच्छी तरह हक्के रफ़ाक़त अदा किया और दुनिया जहान के बेहतरीन फ़ायदों से हमें मालामाल किया फिर जब उसका ज़माना ख़त्म हो गया मुद्दत बीत गई और गिनती तमाम हो गई तो वह हमसे जुदा हो गया। अब हम उसे रूख़सत करते हैं उस शख्स के रूख़सत करने की तरह जिसकी जुदाई हम पर शाक़ हो और जिसका जाना हमारे लिये ग़मअफ़ज़ा और वहशतअंगेज़ हुआ और जिसके अहद व पैमान की निगेहदाशत इज़्जत व हुरमत का पास और उसके वाजिबुल अदा हक़ से सुबुकदोशी अज़्र बस ज़रूरी हो। इसलिये हम कहते हैं ऐ अल्लाह के बुजुर्गतरीन महीने, तुझ पर सलाम। ऐ दोस्ताने खुदा की ईद तुझ पर सलाम। ऐ औकात में बेहतरीन रफ़ीक़ और दिनों और साअतों में बेहतरीन महीने तुझ पर सलाम। ऐ वह महीने जिसमें उम्मीद बर आती हैं और आमाल की फ़रावानी होती है, तुझ पर सलाम, ऐ वह हम नशीन के जो मौजूद हो तो उसकी बड़ी क़द्र व मन्ज़िलत होती है और न होने पर बड़ा दुख होता है और ऐ वह सरश्माए उम्मीद दरजा जिसकी जुदाई अलम अंगेज़ है, तुझ पर सलाम। ऐ वह हमदम जो उन्स व दिलबस्तगी का सामान लिये हुए आया तो शादमानी का सबब हुआ और वापस गया तो वहशत बढ़ाकर ग़मगीन बना गया। तुझ पर सलाम। ऐ वह हमसाये जिसकी हमसायगी में दिल नर्म और गुनाह कम हो गए, तुझ पर सलाम। ऐ वह मददगार जिसने शैतान के मुकाबले में मदद व एआनत की, ऐ वह साथी जिसने हुस्ने अमल की राहें हमवार कीं तुझ पर सलाम। (ऐ माहे रमज़ान) तुझमें अल्लाह तआला के आज़ाद किये हुए बन्दे किस क़द्र ज़्यादा हैं और जिन्होंने तेरी हुरमत व इज़्जत का पास व लेहाज़ रखा वह कितने खुश नसीब हैं, तुझ पर सलाम, तू किस क़द्र गुनाहों को महो करने वाला और किस्म किस्म के ऐबों को छिपाने वाला है। तुझ पर सलाम। तू गुनहगारों के लिये कितना तवील और मोमिनों के दिलों में कितना पुर हैबत है। तुझ पर सलाम। ऐ वह महीने

जिससे दूसरे अय्याम हमसरी का दावा नहीं कर सकते, तुझ पर सलाम। ऐ वह महीने जो हर अम्र से सलामती का बाएस है तुझ पर सलाम। ऐ वह जिसकी हम नशीनी बारे खातिर और मआशेरत नागवार नहीं, तुझ पर सलाम जबके तू बरकतों के साथ हमारे पास आया और गुनाहों की आलूदगियों को धो दिया, तुझ पर सलाम। ऐ वह जिसे दिल तंगी की वजह से रूखसत नहीं किया गया और न खस्तगी की वजह से उसके रोजे छोड़े गये तुझ पर सलाम। ऐ व हके जिसके आने की पहले से ख्वाहिश थी और जिसके खत्म होने से कब्ल ही दिल रंजीदा हैं तुझ पर सलाम। तेरी वजह से कितनी बुराईयां हमसे दूर हो गईं और कितनी भलाइयों के सरचश्मे हमारे लिये जारी हो गये। तुझ पर सलाम (ऐ माहे रमज़ान) तुझ पर और उस शबे कद्र पर जो हजार महीनों से बेहतर है। सलाम हो, अभी कल हम कितने तुझ पर वारफ़ता थे और आने वाले कल में हमारे शौक की कितनी फ़रावानी होगी। तुझ पर सलाम। (ऐ माहे मुबारक तुझ पर) और तेरी उन फ़ज़ीलतों पर जिनसे हम महरूम हो गए और तेरी गुज़िश्ता बरकतों पर जो हमारे हाथ से जाती रहीं। सलाम हो ऐ अल्लाह हम उस महीने से मख़सूस हैं जिसकी वजह से तूने हमें शरफ़ बख़शा और अपने लुत्फ़ व एहसान से इसकी हक़शिनासी की तौफ़ीक़ दी जबके बदनसीब लोग इसके वक़्त की (कद्र व कीमत) से बेख़बर थे और अपनी बदबख़्ती की वजह से इसके फ़ज़ल से महरूम रह गए। और तू ही वली व साहेबे इख़्तियार है। के हमें इसकी हक़शिनासी के लिये मुन्तख़ब किया और इसके एहकाम की हिदायत फ़रमाई। बेशक तेरी तौफ़ीक़ से हमने इस माह में रोजे रखे, इबादत के लिये क़याम किया मगर कमी व कोताही के साथ और मुश्ते अज़ ख़रवार से ज़्यादा न बजा ला सके। ऐ अल्लाह! हम अपनी बदआमाली का इकरार और सहलअंगारी का एतराफ़ करते हुए तेरी हम्द करते हैं और अब तेरे लिये कुछ है तो वह हमारे दिलों की वाक़ेई शर्मसारी और हमारी ज़बानों की सच्ची माज़ेरत है, लेहाज़ा इस कमी व कोताही के बावजूद जो हमसे हमसे हुई है हमें ऐसा अज़ अता कर के हम उसके ज़रिये दिलख़्वाह फ़ज़ीलत व सआदत को पा सकें और तरह तरह के अज़ व सवाब के ज़ख़ीरे जिसके हम आरज़ूमन्द थे उसके एवज़ हासिल कर सकें। और हम ने तेरे हक़ में जो कमी व कोताही की है उसमें हमारे उज़र को कुबूल फ़रमा और हमारी उम्मे आईन्दा का रिश्ता आने वाले माहे रमज़ान से जोड़ दे। और जब उस तक पहुंचा दे तो जो इबादत तेरे शायाने शान हो उसके बजा लाने पर हमारी एआनत फ़रमाना और इस इताअत पर जिसका वह महीना सज़ावार है अमल पैरा होने तौफ़ीक़ देना और हमारे लिये ऐसे नेक आमाल का सिलसिला जारी रखना के जो ज़मानाए ज़ीस्त के महीनों में एक के बाद दूसरे माह माहे रमज़ान में तेरे हक़ अदायगी का बाएस हों।

ऐ अल्लाह! हमने इस महीने में जो सगीरा या कबीरा मासीयत की हो, या किसी गुनाह से आलूदा और किसी ख़ता के मुरतकिब हुए हों जान बूझकर या भूले चौके, खुद अपने नफ़्स पर जुल्म किया हो या दूसरे का दामने हुरमत चाक किया हो। तू मोहम्मद (स0) और उनकी आल

(अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें अपने पर्दे में ढांप ले, और अपने अफ़ो व दरगुज़र से काम लेते हुए मुआफ़ कर दे। और ऐसा न हो के इस गुनाह की वजह से तन्ज़ करने वालों की आंखें हमें घूरें और तानाज़नी करने वालों की ज़बानें हम पर खुलें। और अपनी शफ़क़ते बेपायां और मरहमत रोज़अफ़ज़ों से हमें इन आमाल पर कारबन्द कर के जो उन चीज़ों को बरतरफ़ करें और उन बातों की तलाफ़ी करें जिन्हें तु इस माह में हमारे लिये नापसन्द करता है।

ऐ अल्लाह! मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और इस महीने के रूख़सत होने से जो कलक़ हमें हुआ है उसका चारा कर और ईद और रोज़ा छोड़ने के दिल हमारे लिये मुबारक करार दे और उसे हमारे गुज़रे हुए दिनों में बेहतरीन दिन करार दे जो अफ़ो व दरगुज़र को समेटने वाला और गुनाहों को महो करने वाला हो और तू हमारे ज़ाहिर व पोशीदा गुनाहों को बख़्श दे। बरे इलाहा! इस महीने के अलग होने के साथ तू हमें गुनाहों से अलग कर दे और इसके निकलने के साथ तू हमें बुराइयों से निकाल ले। और इस महीने की बदौलत उसको आबाद करने वालों में हमें सबसे बढ़कर ख़ुश बख़्त बानसीब और बहरामन्द करार दे। ऐ अल्लाह! जिस किसी ने जैसा चाहिये इस महीने का पास व लेहाज़ किया हो और कमा हक्क़हू इसका एहतेराम मलहूज़ रखा हो और इसके एहकाम पर पूरी तरह अमलपैरा रहा हो। और गुनाहों से जिस तरह बचना चाहिये उस तरह बचा हो या ब नीयते तक़रूब ऐसा अमले ख़ैर बजा लाया हो जिसने तेरी ख़ुशनूदी उसके लिये ज़रूरी करार दी हो और तेरी रहमत को उसकी तरफ़ मुतवज्जेह कर दिया हो तो जो उसे बख़्शे वैसा ही हमें भी अपनी दौलते बेपायां में से बख़्श और अपने फ़ज़ल व करम से इससे भी कई गुना ज़ाएद अता कर। इस लिये के तेरे फ़ज़ल के सोते ख़ुशक नहीं होते और तेरे ख़ज़ाने कम होने में नहीं आते बल्कि बढ़ते ही जाते हैं। और न तेरे एहसानात की कानें फ़ना होती है और तेरी बख़्शिश व अता तो हर लेहाज़ से ख़ुशगवारबख़्शिश व अता है।

ऐ अल्लाह! मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और जो लोग रोज़े कयामत तक इस माह के रोज़े रखें या तेरी इबादत करें उनके अज़्र व सवाब के मानिन्द हमारे लिये अज़्र व सवाब सब्त फ़रमा। ऐ अल्लाह! हम उस रोज़े फ़ित्र में जिसे तूने अहले ईमान के लिये ईद व मसरत का रोज़ और अहले इस्लाम के लिये इज्तेमाअ व तआवुन का दिन करार दिया है हर उस गुनाह से जिसके हम मुरतकिब हुए हों और हर उस बुराई से जिसे पहले कर चुके हों और हर बुरी नीयत से जिसे दिल में लिये हुए हों उस शख़्स की तरह तौबा करते हैं जो गुनाहों की तरफ़ दोबारा पलटने का इरादा न रखता हो और न तौबा के बाद ख़ता का मुरतकिब होता हो। ऐसी सच्ची तौबा जो हर शक व शुबह से पाक हो। तो अब हमारी तौबा को कुबूल फ़रमा हमसे राज़ी व ख़ुशनूद हो जा और हमें इस पर साबित क़दम रख। ऐ अल्लाह! गुनाहों की सज़ा का ख़ौफ़ और जिस सवाब का तूने वादा किया है उसका शौक़ हमें नसीब फ़रमा ताके जिस

सवाब के तुझसे ख्वाहिशमन्द हैं उसकी लज्जत और जिस अजाब से पनाह मांग रहे हैं उसकी तकलीफ़ व अजीयत पूरी तरह जान सकें। और हमें अपने नजदीक उन तौबा गुजारों में से करार दे जिनके लिये तूने अपनी मोहब्बत को लाज़िम कर दिया है और जिनसे फ़रमाबरदारी व इताअत की तरफ़ रूजू होने को तूने कुबूल फ़रमाया है। ऐ अद्ल करने वालों में सबसे ज़्यादा अद्ल करने वाले।

ऐ अल्लाह! हमारे मां बाप और हमारे तमाम अहले मज़हब व मिल्लत ख्वाह वह गुजर चुके हों या क़यामत के दिन तक आईन्दा आने वाले हों सबसे दरगुजर फ़रमा। ऐ अल्लाह! हमारे नबी मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा जैसी रहमत तूने अपने मुकर्रब फ़रिश्तों पर की है। और उन पर उनकी आल पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा जैसी तूने अपने फ़रस्तादा नबीयों पर नाज़िल फ़रमाई है। और उन पर और उनकी आल(अ0) पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा जैसी तूने अपने नेकोकार बन्दों पर नाज़िल की है। (बल्कि) इससे बेहतर व बरतर। ऐ तमाम जहान के परवरदिगार ऐसी रहमत जिसकी बरकत हम तक पहुंचे, जिसकी मनफ़अत हमें हासिल हो और जिसकी वजह से हमारी दुआएं कुबूल हों। इसलिये के तू उन लोगों से जिनकी तरफ़ रूजू हुआ जाता है, ज़्यादा करीम और उन लोगों से जिन पर भरोसा किया जाता है, ज़्यादा बेनियाज़ करने वाला है और उन लोगों से जिनके फ़ज़ल की बिना पर सवाल किया जाता है, ज़्यादा अता करने वाला है और तू हर चीज़ पर कादिर व तवाना है।